# शान्ति

"क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इस दिन में कुशल (शान्ति) की बातें जानता।" लूका० १९ : ४२ ॥

जब हम अपनी चारों ओर दृष्टि करते हैं और उन सब बातों को आज देखते हैं, तो हमारे लिए यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि जगत मे शान्ति नहीं है। हर जगह आप द्वेष, बैर, लड़ाई, हत्या, युद्ध तथा युद्ध की चर्चा सुनते हैं। यह कोई बात नहीं है, आप जो भी समाचार पत्र खोलेंगे, उनमें आप, लोगों को एक दूसरों के प्रति भयानक कार्य करते हुए पाएंगे, जिसका कारण पाप, बैर और ईर्षा डाह है। जगत के महापुरुष बहुत वर्षों से इसी प्रयत्न में लगे हुए हैं कि जगत में शान्ति लाएं और अब तक उन में से कोई भी इस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं किया है। न केवल जगत में ही इस तरह की हालत है, परन्तु शोक या दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हम में से बहुतों के घरों में भी शान्ति नहीं है। सबसे बुरी हालत तो यथार्थता में यही है कि इस जगत में अभी लोग यद्यपि बहुत ही संख्या में पाए जाते हैं किन्तु उनके आत्माओं को शान्ति प्राप्त नहीं है और यहीं पर सब दुःखों का मूल कारण पाया जाता है।

## क्यों शान्ति नहीं है ?

आदि ( आरम्भ ) में परमेश्वर ने जगत की सृष्टि की, साथ ही साथ घास, फूल, वृक्ष तथा सभी जीव-जन्तुओं को जो जल के तले तथा उनकी भी जो सूखी भूमि में रहते हैं सृष्टि की। परमेश्वर ने आदम और हव्वा की भी सृष्टि की; और उस समय सारी सृष्टि में

चैन और शान्ति थी। आदम और हव्वा किसी भी जीवजन्तु से नहीं डरते थे, और जीव-जन्तु भी आपस में सुख और शान्तिपूर्वक बास करते थे। भेड़ भी सिंह के साथ-साथ चलता-फिरता था और सिंह भी उसकी हानि नहीं किया करता था। सर्वोपरि परमेश्वर और मनुष्य के बीच में भी शान्ति थी और परमेश्वर भी शाम के ठंढे समय में आदम और हव्वा के साथ-साथ चलता फिरता और बातें किया करता था। उन्हें परमेश्वर की ओर से उनके हृदय में कोई भय नहीं था; और वे उसके आने की बाट देखते थे, कि वह उनके साथ संगति रखे।

तब शैतान, जो शान्ति का बैरी है, सांप में प्रवेश करके आदम और हव्वा को पाप करने के लिये परीक्षा किया, क्योंकि जहाँ पाप है वहां शान्ति नहीं है। शैतान जो झूठों का पिता है, उन्हें यही बतलाया कि वे परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन करने और परमेश्वर से वर्जित किया हुआ फल खाने पर भी नहीं मरेंगे। इसी तरह बहुत से लोग अब तक और अभी भी दुष्टात्मा की आवाज सुनते हैं; इस से आदम और हव्वा ने वही कार्य किया जिसके करने के लिये शैतान ने उनकी परीक्षा ली थी, और वे परमेश्वर के विरुद्ध में पाप किये। उसी समय से जिस शान्ति का वे आनन्द भोग करते थे, उनसे वह बिछुड़ गया। सभी शान्ति और सुन्दरता जो परमेश्वर ने सृष्टि की थी, एक पाप के कार्य करने से अब नाश हो गया और आदम और हव्वा के हृदय में भय समा गया।

उस शाम को परमेश्वर फिर नियमित रूप से उन से बातें करने को आया, किन्तु वे अपने तांई को उनसे छिपाया, क्योंकि वे उसकी उपस्थिति से डरते थे।" इसलिए एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया।" और हम सब भी जो अबतक जीते हैं, "सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमि, ५ : १२ ; ३ : २३)॥ एक पाप साधारणतः दूसरे पाप की ओर ले जाता है और आज भी सारा जगत पाप से पीड़ित है, और इसलिए शान्ति इस पृथ्वी पर राज्य नहीं करता है।

## परमेश्वर जगत में फिर से शान्ति स्थापन करने की इच्छा की।

परमेश्वर ने स्वर्ग पर से दृष्टि करके सब बैर भाव, भय, पाप और उदासी को देखा और अपने उस बड़े प्रेम में उसने अपने एकलौते पुत्र को चरणी में जन्म लेने को भेजा। हमें वर्ष-वर्ष ख्रीस्तमस (बड़े दिन) के समय दूत के उन वचनों का स्मरण कराया जाता है।

मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें आनन्द का सुसमाचार सुनाता हू, जो सब लोगों के लिए होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है। तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते हुए दिखाई दिया। कि आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिन से वह प्रसन्न है शान्ति हो। (लूका २ : १०-१४)। यीशु इस धरती पर भेजा गया कि अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे, और हमारे पांवों को कुशल (शान्ति) के मार्ग में सीधे चलाए।" (लूक १ : ७९)। इफिसि २ : १४ भी हमें बतलाता है कि "वह हमारा मेल (शान्ति) है।" परमेश्वर ने शान्ति के राजकुमार को इस जगत में भेजा है, और यदि उन दिनों के लोग केवल शान्ति के राजकुमार को ग्रहण करते तो फिर से एक बार मेल और शान्ति के साथ जीवन व्यतीत करते।

## लोगों ने उस शान्ति के साथ क्या किया ?

जिस तरह से आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन किया, उसी तरह से यहूदी लोग, अन्य-जाति तथा उस समय के लोगों ने भी परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन करने को चुन लिया और शैतान की सलाह का अवलम्बन किया। वे राजकुमार (यीशु) का इन्कार किये, और जब पिलातुस ने यीशु और बरअब्बा को उनके सम्मुख रखा तो वे पुकार उठे, यीशु का काम तमाम कर, और बरअब्बा को हमें दे।" दूसरे शब्दों में उनका अभिप्राय था कि शान्ति का राजकुमार को ले जाईए, और हमें बैर, युद्ध, हत्या और पाप को दीजिए। इन लोगों की अपनी ही स्वतंत्र इच्छा थी कि जिसको वे चाहते थे, चुन ले सकते थे, इन पर बरबस नहीं किया गया था, तिस पर भी इन्होंने बरअब्बा को ही चुन लिया। इन दिनों में भी जितमें हम अभी अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, ठीक इसी प्रकार की बातें पाई जाती हैं। परमेश्वर ने हमे भी चुन लेने का स्वतंत्र अधिकार दिया है। हम अपने लिये शीशु को अपना उद्धारकर्त्ता और राजा मान के उसे अपने लिये ले सकते हैं, और वह हमारे जीवन में शान्ति लाएगा। वह कहता है, "मैं तुम्हे शान्ति दिये जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता।" (युहन्ना. १४:२७)॥ हमारे जीवन में जो पाप हैं वे हमे परमेश्वर से दूर कर रखा है, और हमारे इस पापमय दशा में अपने आप में हममें शान्ति नहीं है, परन्तु यीशु सदा अपना हाथ पसारे हमारी बाट जोहता है कि हमे फिर से अपने झुन्ड में मिला ले, हमे अपने बहुमूल्य लोहू से शुद्ध करे, परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दे, और हमें शान्ति दे॥

हम रोमि, ५:१ में बतलाए जाते हैं कि जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे हैं, तो अपने यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमें शान्ति प्राप्त है।" इस संसार में ऐसा कोई नहीं है जो हमें शान्ति दे सकता है। रुपये, धन सम्पति, और प्रतिष्ठा उसे नहीं दे सकते है। अपने प्राण और आत्मा के लिये शान्ति प्राप्त करने का केवल एक ही राह है कि हम प्रभु यीशु के पास आएं और उसके सामने अपने पापों का अंगीकार करें और उन से अपना मन फिराएं और "वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" "यीशु जो शान्ति देता है, वह समझ से बिल्कुल परे है (फिलिप्पि. ४७)। यह मनुष्य से व्याखा या वर्णन नहीं किया जा सकता है, पर हम उसे अपने जीवन में अनुभव कर सकते हैं, यदि हम इस संसार के और उसकी वस्तुओं को, पाप को और पापी मित्रों को त्याग करके प्रभु यीशु मसीह की ओर फिर कर केवल उसी की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। हम लोग बिना शान्ति के जीवित रह सकते हैं, किन्तु शान्ति के बिना मर जाने नहीं सकते हैं। "क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है।" (रेमि: १४:१७)। इसलिए यदि हमारे हृदय में परमेश्वर की शान्ति प्राप्त नहीं है तो निश्चय ही उसकी शान्ति के स्वर्ग में हमारा स्वागत नहीं होगा।

यदि हम ने शान्ति के राजकुमार को अपने जीवन में ग्रहण नहीं किए हैं और अपनी पाप की दशा में मरते है, तो हम लोगों के लिए केवल एक ही स्थान धरा हुआ है, और वह है नरक की अनन्त आग। अभी आप जिस दशा में है, उसी दशा में मर नहीं सकते हैं, क्योंकि आप अनन्त काल के लिए खोए जाएंगे और परमेश्वर का वचन हमें बतलाता है "आप की पीड़ा का धूआं सदा उठता ही रहेगा।" यह सदा काल का नरक है जिसकी

ओर पापी जा रहा है, क्योंकि हम सभों ने पाप किया ।" "कोई धर्मी नहीं; एक भी नहीं । इसलिए यदि आप स्वग जाना चाहते हैं तो केवल एक ही काम आप को करना है, और वह यह है कि आप परमेश्वर से मेल या शान्ति स्थापित कर लें, और अपने हृदय में परमेश्वर की शान्ति प्राप्त करलें, और परमेश्वर की शान्ति आप के हृदय में राज्य करे ।" (कुलुस्सि. ३: १५) ॥

बड़े दिन (क्रीस्तमस) के समय में हम लोग इस बात का स्मरण कराए जाते हैं कि यीशु इस जगत में शान्ति लाने को आएगा । ईस्टर या जी उठना पर्व के समय में हम स्मरण कराए जाते हैं कि किस तरह से लोगों ने उसे नकारा और क्रूस पर चढ़ाया । प्रिये मित्र, क्या आप उन्हीं लोगों के समान होने जा रहे हैं, जिन्हों ने अपने स्वामी (प्रभु) को नकारा, अथवा क्या आप अपने जीवन को खोलने जा रहे हैं कि उसे आप के जीवन में आने दें ? आप के हृदय में परमेश्वर की शान्ति को प्राप्त करने का केवल एक ही उपाय है, और वह यह है कि आप अपने घुटने पर अभी गिर कर उस से यह मान लें कि आप एक पापी हैं, और उसे यह कहें कि वह आप को शुद्ध करे और अपने बहुमूल्य लोहू से आप को धोकर अपना बना ले । चाहे आप अपने को कितना ही अच्छा क्यों न समझते हों पर आप को बचाए जाने की आवश्यकता है; चाहे आप अपने को कितना ही बुरा क्यों न सोचते हों, वह आपको ग्रहण करने की इच्छा रखता है, और वह आप को अपने से दूर नहीं करेगा, न किसी को वह कभी दूर करेगा । यदि आप अपने प्राण (आत्मा) में परमेश्वर की शान्ति का अनुभव अब तक कभी नहीं किये हैं, तो अभी आप उसे ग्रहण करें, तो आप को अकथनीय आनन्द और महिमा की भरपूरी प्राप्त होगी ।

किसी एक सुसमाचार की मेवकाई के कार्य में एक वृद्ध जन उठ खड़ा हुआ और बोला, "मैंने चार राजाओं के राज्य शासन काल में अपना जीवन व्यतीत किया है, पहिले के राज्य में सदा युद्ध हुआ करता था, और वह एक भयानक समय था । दूसरे के राज्य में हमें एक भारी अकाल का सामना करना पड़ा, जिसके फलस्वरुप लोगों ने चूहों का घास पात का तथा लकड़ियों का भोजन किया । तीसरे राजा के राज्य में बैरियों ने हम पर चढ़ाई कर हमे अपने वश में किया और हम उन के दास बनाए गए । इसी तीसरे राजा के राज्य शासन में एक दूसरा राजा, एक महान राजा, एक भला राजा, एक शान्ति का राजा, एक प्रेम का राजा आया--यीशु, जो स्वर्ग से प्रभु है ! उसने अब विजय प्राप्त किया । उसने हमारे हृदय को जीत लिया । इसलिए अभी हम लोग शान्ति और बहुतायत में जीवन बिताते हैं और आशा करते हैं कि स्वर्ग में जल्द उसके साथ बास करेंगे ।"

प्रिये मित्र, अपने जीवन को अब आप यीशु को अर्पण कीजिए । इसी घड़ी आप अपने नरक की ओर नीचे जाने वाले सड़क पर खड़े होकर उधर से अपना मुख फेर कर राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की सेवा करने को लौट आएं । आप यही पाएंगे कि आप के मित्र आप को त्याग देंगे । पर आप स्मरण रखें, यीशु ने कहा है, "देखो, मैं जगत के अन्त तक तुम्हारे संग हूं," और अन्त में "परमेश्वर की शान्ति तुम्हारे हृदय में बास करे ।" ( कुलुस्सि. ३: १५ ) *M. R. GSCHWEND.*

E-MAIL: info@angp.co.za
ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS
P.O. Box 2191, PRETORIA, 0001, R.S.A.
(A Gospel Literature Mission financed by donations)
(Reg. No. 1961/001798/08)